SHODH SAMAGAM
ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ का ग्राम्य संस्कार

गुलशन, शोधार्थी, साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
गुलशन, शोधार्थी
E-mail :gkvrjn3@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 02/03/2026
Revised on : 03/05/2026
Accepted on : 12/05/2026
Overall Similarity : 00% on 04/05/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: May 4, 2026 (04:19 PM)
Matches: 0 / 2800 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

भारत का हृदयस्थली मध्य–पूर्वी राज्य–छत्तीसगढ़, अपनी ग्राम्य संस्कृति, लोकजीवन और लोकसंस्कार के कारण पहचानी जाती हैं। भारत गणराज्य के समान छत्तीसगढ़ भी ग्रामों का प्रदेश है। विभिन्न देशों, प्रदेशों के अपने संस्कार होते हैं, जिनसे उन राज्य की पहचान होती है। छत्तीसगढ़िया ग्राम्यजनों के भी अपने संस्कार हैं जो भौतिक–सांस्कृतिक रूप में विद्यमान है। ग्राम्य–संस्कार व्यक्तिगत जीवन को दिशा देने के साथ ही सामुदायिक एकता, लोक–आस्था और सामाजिक समरसता के भी प्रतीक हैं। कालखंड के साथ–साथ स्थिति–परिस्थिति और सामाजिक दशा बदलती है, फिर भी छत्तीसगढ़ का ग्राम्य जीवन अपनी संस्कारों को लिये अग्रसित है। इन्ही का अध्ययन छत्तीसगढ़ के 'ग्राम्य–संस्कार' में है।

मुख्य शब्द

छत्तीसगढ़िया, ग्राम्य–जीवन, लोकगीत, संस्कार.

छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़िया

1 नवम्बर वर्ष 2000 को अस्तित्व में आया छत्तीसगढ़ राज्य पूर्व में मध्यप्रदेश का हिस्सा था। "उससे पहले यह महाकौशल क्षेत्र में रहकर सी.पी. एण्ड बरार का हिस्सा था।"[1] राज्य निर्माण के पूर्व पृथक राज्य– छत्तीसगढ़ की की मांग दशकों से उठती आ रही थी। विभिन्न साहित्यकार, इतिहासकार, लोकजन और समस्त क्षेत्रवासी छत्तीसगढ़ राज्य की मांग कर रहे थे। छत्तीसगढ़ को विभिन्न नामों से जाना जाता रहा है, जैसे– महाकोशल, दण्डकारण्य, चेदिसगढ़, दक्षिणकोसल, छत्तीसगढ़ आदि। कई विद्वानों ने छत्तीसगढ़ नामकरण को लेकर उल्लेख किया है परंतु छत्तीस–गढ़ों (किलों) के कारण 'छत्तीसगढ़' नाम सार्थक पड़ता है:

"गढ़ प्रमुख रहिन हे छत्तीस, तब छत्तीसगढ़ कहलाइस।"[2]

साहित्य में छत्तीसगढ़ शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग गोपाल चंद्र मिश्र ने 'खूब तमाशा' (संवत 1686 विक्रम) में इस प्रकार की है:

"छत्तीसगढ़ गाढ़े जहाँ, बड़े गढोंई जानि ।
सेवा स्वामिन को रहैं सकैं, ऐड़ को मानी ।।"[3]

हमारे देश भारत के निवासियों को भारतीय कहा जाता है। भारतीय संविधान के अनुसार– "भारत के राज्यक्षेत्र में सर्वत्र आबाध संचरण का"[4] और "भारत के राज्यक्षेत्र के किसी भी भाग में निवास करने और बस जाने"[5] की स्वातंत्र्य–अधिकार है।

जिस क्षेत्र/प्रांत/राज्य में व्यक्ति जन्म लिया रहता है, उनके गुण, संस्कार उनके अनुसार परिलक्षित हो ही जाते हैं। इसलिए स्वतंत्रता पूर्व अंग्रेजों ने भारत को इतने वर्ष गुलाम बनाने के बाद भी वह भारतीय नहीं हो सका। राज्यों के निर्माण में जनसंख्या, भौगोलिकी, बोली–भाषा, रहन–सहन, लोक–संस्कृति महत्वपूर्ण होती हैं, जो उस राज्य–निर्माण की नीव होती हैं। भारतीय राज्यों के संबंध में भी बिहार निवासियों को – बिहारी, पंजाब निवासियों को– पंजाबी, गुजरात निवासियों को गुजराती, महाराष्ट्र के निवासियों को महाराष्ट्रीयन कही जाती है। उसी प्रकार छत्तीसगढ़ के लोकजनों को 'छत्तीसगढ़िया'।

पाणिनी के अनुसार: "राज्यों कर नाम वही होते थे, जिस नाम से वहाँ के निवासी संबोधित किए जाते हैं। छत्तीसगढ़ के निवासी 'छत्तीसगढ़िया' नाम से संबोधित किए जाते हैं।"[6]

छत्तीसगढ़िया – ग्राम्य – संस्कार

'ग्राम्य संस्कार' का आशय गाँव में पीढ़ी–दर–पीढ़ी चले आ रहे उन परंपराओं, रीति–रिवाजों और सांस्कृतिक आचरणों से है, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक समस्त आचरणों को प्रभावित करते हैं।

खदर के छानी, माटी के भिचिया, गोबर–पानी लिपाय...
माटी के चूल्हा म जेवन चुरत हे, छेना आगी गुंगवाय...
परोसिन आगी मांगे बर आय...

जन्म, विवाह एवं मृत्यु संस्कार

जन्म, विवाह एवं मृत्यु संस्कार में समाज व ग्रामवासियों का सहयोग देखा जा सकता है। जन्म में प्रसव पूर्व से लेकर छट्ठी–बरही तक सहयोग प्रदान करते हैं। विवाह में तो पूर्व से ही सहयोग देखा जा सकता है। "विवाह संस्कार का विशेष महत्व है।"[7] वैवाहिक रिश्ता तय करने में 'सटका' की प्रमुख भूमिका होती है। यह दोनों पक्ष को करीब से जनता है और बातचीत को आगे बढ़ाने अर्थात् मध्यस्थता करने और रिश्तों को जुड़वाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विवाह में समस्त गाँव ही खुशी मनाता है। मानो स्वयं के घर–परिवार में शादी हो रही हो, ऐसा उमंग रहता है। विवाह पूर्व निमंत्रण कार्ड देने में सहयोग, विवाह प्रथम दिवस मड़वा छाने में सहयोग। मंडपाच्छदन हेतु आमा डाली, नदी किनारे स्थित दुमर डाली, या जामुन डाली से मंडप निर्माण को छाने के लिए की जाती है। आधुनिकता से दूर जब पंडाल व्यवस्था नहीं थी, तब से इसका प्रयोग मंडप के रूप में करते आ रहे हैं। छत्तीसगढ़ी में इसे 'मड़वा–छवउनी' कहते हैं। इनको छाने से मंडप के नीचे शीतलता और ठंडक गर्मी के दिनों में बनी रहती हैं। मंडप संबंधित गीत भी हैं:

आमा डारा के छायेंव, हरियर मड़वा...
पाना दुमर के छवायेंव,
की ये मोर संगा, दुलरू के माढ़े हे बिहाव...

"सामाजिक संस्कारों में विवाह एक महत्वपूर्ण संस्कार है।"[8] विवाह में परिवार और सगे–संबंधियों की उपस्थिति रौनक ला देती है। रिश्तों में जिन्हे फूफा या जीजा कहते हैं, उनकी भूमिका विवाह के समय (वर पक्ष में) 'ढेंड़हा'/'सुवासा' की हो जाती है। जो दूल्हे के साथ रहता है। तथा वधू पक्ष में फुफू (बुआ)/दीदी की भूमिका 'ढेंड़हिन'/'सुवासिन' की हो जाती है जो वधू के साथ संपूर्ण विवाह निष्पादन तक सहयोगी रहती है।

क्र.	रिश्ता	लिंग	विवाह के समय	भूमिका
1.	जीजा/फूफा	पुल्लिंग	ढेंड़हा/सुवासा/कुँवासा	विवाह के समय वर के साथ रहकर समस्त वैवाहिक कार्यों में सहयोग प्रदान करना।
विशेष : छत्तीसगढ़ी के विवाह संस्कार की सांस्कृतिक शब्दावली है– ***(ढेंड़हा/सुवासा/कुँवासा)*** इन्हे विवाह संस्कार के विशेष अवसर पर ही प्रयुक्त/संबोधित की जाती है। अन्य समय सामान्य रिश्ते ***(जीजा/फूफा)*** ही होते हैं।				
2.	बुआ/दीदी	स्त्रीलिंग	ढेंड़हिन/सुवासिन/कुँवासिन	विवाह के समय वधू के साथ रहकर समस्त वैवाहिक कार्यों में सहयोग प्रदान करना।
विशेष: छत्तीसगढ़ी के विवाह संस्कार की सांस्कृतिक शब्दावली है– ***(ढेंड़हिन/सुवासिन/कुँवासिन)*** इन्हे विवाह संस्कार के विशेष अवसर पर ही प्रयुक्त/संबोधित की जाती है। अन्य समय सामान्य रिश्ते ***(बुआ/दीदी)*** ही होते हैं।				

समाज और ग्रामवासियों द्वारा समस्त वैवाहिक कार्यों में सहयोग के अलवा भोज–भंडारे के समय समस्त कार्यों को संपन्न करने में अग्र रहता है।

मृत्यु संस्कार की संपूर्ण प्रक्रिया में समाज और ग्रामवासियों का सहयोग रहता है। शोक पत्र वितरण में दूसरे गाँव (जो मृतक परिवार का संबंधी होता है।) उनको देने के लिए समाज व ग्रामवासियों को क्षेत्रानुसार बाँट दिया जाता है जो अपनी सुविधानुसार शोक पत्र मृतक परिवार के रिश्तेदारों को पहुँचाते हैं।

"मरनी–बरसी म गाँव के सहभागिता के बड़ई करे बर परथे। सबों मनसे ओरी–पांत धरके नहावन जाथे। कुटुम परिवार के मन ड़ाढ़ी–मेंछा, मूंड–मूंडवाथे, पगबंधी म गाँवभर के मनसे जगाजोग पागा–पीछौरी दे के रिस्ता निभाथें।"9

"प्रत्येक व्यक्ति जो जन्म लेता है, उसकी एक न एक दिन मृत्यु अवश्य होती है।"[10] मानव शरीर नश्वर है, इससे संबंधित छत्तीसगढ़ी लोकगीत हैं:

माटी होही तोर चोला रे संगी, माटी होही तोर चोला...
माटी ले उपजे माटी म बाढ़े, माटी होही तोर चोला...
चारेच दिन के सुघर मेला, आखिर म सब माटी के ढेला
माटी होही तोर चोला...

संगठनात्मक एकता

गाँव में जब भी किसी बात को लेकर बईठका (मीटिंग) होती है, उसमें ग्राम प्रमुखो एवं पंच–पटेल और समस्त ग्रामवासियो द्वारा किसी भी बड़े झगड़े आदि का आसानी से हल निकाल लिया जाता है।

प्रकृति प्रेम और संरक्षण का संस्कार

गाँवों में बुजुर्गों को निर्णय लेने में प्रमुख स्थान दिया जाता है। उनके अनुभव और ज्ञान का आदर किया जाता है। बुजुर्गों के अनुभव और राय कभी व्यर्थ नहीं जाते। "छत्तीसगढ़ की संस्कृति में सामूहिकता और भाईचारे का सहज भाव है।"[11] बुजुर्ग गाँव के प्रमुख चौक–चौराहों, मरघट्टी, नदी–तालाब के किनारों आदि में छायादार वृक्ष जरूर लगाते हैं। युवा वर्ग और ग्रामीण महिलायें भी वृक्षरोपण करते हैं। छत्तीसगढ़ के प्रायः हर गाँव में देखने को मिल जाएगा। इसके पिछे बड़े–बुजुर्गों की दुर–दृष्टि रहती है की, जब कोई इसके नीचे बैठे, आराम करे तो उसे भरपूर छाँव मिले, हवा मिले, ताकि वह आराम से अपनी थकान मिटा सके। चौक–चौराहों में बैठ के मेल–मुलाकात कर सके। इन वृक्षों में विशालकाय–बरगद, पीपल, नीम आदि प्रमुख हैं। गाँव में बईठका (मीटिंग) बरगद की छाँव आदि में ही आयोजित की जाती है। गाँवों में पेड़–पौधों, नदियों, पहाड़ों आदि को पूज्य माना जाता है। पेंड–पौधे भरपूर ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोक–पर्वों में जैसे– (हरेली में हल–जोते उपकरणों की पूजा, पौधारोपण और गोवर्धन पूजा जैसे संस्कार) पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हैं।

आतिथ्य संस्कार

अतिथि का अर्थ है– जिसके आने की तिथि न हो। छत्तीसगढ़ी में इसे पहुना (अतिथि) कहा जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य अतिथि विश्राम गृह का नाम भी 'पहुना' है। पहुना को भोजन, आसन और आदरपूर्वक स्थान देना गाँव का महत्वपूर्ण संस्कार है। गाँव में जब अतिथि (मेहमान) का आगमन घर पर होता है, तो सर्वप्रथम उसे लोटे में पानी दिया जाता है, ताकि उस पानी से अतिथि हाथ–पैर धों सके, प्यास लगने पर पी सके, आदि के लिये। पुरखों से लोटे में पानी देने की परंपरा छत्तीसगढ़ में मेहमानों को है। यह एक मान है– अतिथि के लिये व हमारा संस्कार भी। अतिथि के जाने पर मोहाटी (घर की देहलीज/द्वार) तक छोड़ने/साथ चलने का संस्कार अपने अतिथि के लिए देखा जाता है।

सगा घर सगा जाथे, सगा के मान बढाथे...
लोटा भर पानी, लोटा भर पानी...

मातृ संस्कार

छत्तीसगढ़ की ग्राम्य महिलायें अपने से बड़ों के सामने पल्लू सिर से ढँक कर रखती हैं। जेठ को दूर से पैर पड़ती हैं। देवरों के लिए भाभी– माँ समतुल्य होती हैं। विवाहित बहु, अपने मायके (जिस गाँव) से आयी रहती है, अधिकांश ग्राम्य–जन व वरिष्ट महिलायें उन बहुओं को उनके मायके गाँव के नाम से संबोधित करते हैं।

छत्तीसगढ़ी महिला साहित्यकार सरला शर्मा जी के अनुसार– "छत्तीसगढ़ म एक ठन बड़ सुघर रिवाज हे, जब नवा बहुरिया ससुरार म आथे त महतारी–बाबू के राखे ओकर नाव मईके म छूट जाथे। ससुरार म ओहा मईके के गाँव के नांव ले चिन्हे जाथे।"[12]

शहर/स्थान	'इन' प्रत्यय	संबोधन
रायपुर	रायपुर + इन	रईपुरहिन
दुरुग	दुरुग + इन	दुरगहिन
नंदगाँव	नंदगाँव + इन	नंदगहिन
बिलासपुर	बिलासपुर + इन	बिलासपुरहिन/बेलासपुरहिन
खैरागढ़	खैरागढ़ + इन	खैरागढ़हिन

प्रायः जो भी गाँव/शहर होता है, उन स्थानों के नाम से (बहुओं का मायका हो) उनसे बहुओं को संबोधित करने में 'इन' प्रत्यय का प्रयोग देखा जा सकता है तथा पुरुषों के लिए यह प्रयुक्त की जाती है:

शहर/स्थान	रायपुर	नंदगाँव	खैरागढ़	बिलासपुर	रायगढ़
संबोधन	रायपुरिहा	नंदगंईहा	खैरागढ़िया	बेलसपुरिहा	रायगढ़िया

इस संबंध में एक गीत भी है:

तैं बिलसपुरहिन अस, अउ मैं रायगढ़िया ।
तोर–मोर जोड़ी, फभे हे सबले बढ़िया।।

इन बड़े शहरों की तरह अन्य छोटे गाँव कों भी जिस गाँव से उनका मायका होता है, उनसे संबोधित किया जाता है। तीजा–पोरा त्योहार के अवसर पर ग्रामीण महिलाओं को अपने मायके की रोटी का इंतजार रहता है, जिन्हे उनकी पिता/भाई लाते हैं:

ससुरे म करबे बेटी, भाई के अगोरा वो...
मईके के तिजहर रोटी, लाही तीजा–पोरा वो...

कका–भतीजे की जोडी

काका (चाचा) को छतीसगढ़ी में 'कका' कहते हैं। जिस बात को भतीजे अपने माँ–पापा से नहीं कह पाते, उन्हे अपने कका (चाचा) से निसंकोच कह देते हैं। ऐसी जोड़ी होती है कका–भतीजे की।

तोला जिनगी–भर बाप के दुलार दुहुँ जी...
मैं तो आवंव तोरे कका,
भतीजा तैं मोर...

वार्तालाप में संस्कार

गाँव में जब कोई एक दूसरे से राह चलते मिलते हैं, अभिवादन के साथ ही कहते हैं– 'अउ जी सब बने–बने' अर्थात सब कुशल मंगल है?। कितना सुंदर ग्राम्य–जनों के वार्तालाप का संस्कार है। सरल–सहज, भेदभाव रहित व एक–दूसरे के प्रति सहयोगात्मक भाव ग्राम्य–जनों में देखा जा सकता है। गाँव में दादी–नानी या घर के बुजुर्ग बच्चों को कहानी सुनाते हैं, उनमें भी संस्कार भरे रहते हैं। बच्चे खुशी–खुशी कहानी सुनते हैं, और अंत में सार के रूप में उनको जाने–अनजाने गूढ़ ज्ञान मिलता है। छत्तीसगढ़ में लोकोक्तियों की भरमार है। ग्राम्य–जनों से हाना, कहावत और मुहावरों के मध्याम से जाने–अनजाने ज्ञान–भंडार व बहुत से तथ्यों को जानने समझने मिलता है।

गाँव में जब भी कोई एक दूसरे के घर सुबह या शाम के समय जाते हैं तो उस घर में जाके एक वाक्य अवश्य सुनने को मिलती है– 'का साग राँधे हो'? (क्या सब्जी बनी है?) इस वाक्य से उस घर में वार्तालाप की शुरुवात होती है।

मित्रता संस्कार

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जिसे मित्रता दिवस (फ्रेंडशिप डे) के रूप में मनाया जाता है, छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति में मितानी (मित्रता–संस्कार) सदियों से चली आ रही है। यह औपचारिक संस्कार है, जिसे 'मितान बधना' कहते हैं। छत्तीसगढ़िया–संस्कार

में मित्रता को अत्यंत पवित्र और जीवन का अभिन्न संस्कार माना गया है जिसे सिर्फ एक दिन बस के लिए नहीं अपितु चिरकाल तक 'मित्रता–संस्कार' निभाई जाती है। 'मितान' छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान है। इनके स्वरूपों में गंगाजल, गंगाबारू, सहिनाव, गोंदाफूल, भोजली, नरियरफुल आदि है। इसकी प्रमुख विशेषता यह है की यह रिश्ता खून का न होने के बावजूद भी घानिष्टता से निभाई जाती है। सुख–दुख में हमेशा सहयोगी रहती है। उनकी आगामी पीढ़ी भी इसे निभाती है।

"मितानी के बड़ महत्ता हे।
जनम–मरन, बर–बिहाव म मितान ल परिवार सहित नेवता मिलथे।
पीढ़ी–दर–पीढ़ी मितानी के नता–रिस्ता चलथे।"[13]

कृषक संस्कार

कृषि हमारे देश भारत के साथ–साथ छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था की भी धुरी है। "छत्तीसगढ़ एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ के निवासियों का प्रमुख उद्यम कृषि है।"[14] कृषि कार्य हेतु जब कृषक, बनिहार (मजदूर) अपने खेत ले जाते हैं, तब समस्त बनिहार कृषि कार्य करते–करते, गीत गाते–गुनगुनाते व एक दूसरे से सहयोगात्मक एवं भावात्मक रखते कार्य करते हैं। कृषि कार्य पूर्ण रूप से संपन्न हो जाने पर कृषक द्वारा मजदूरों को हंसी–खुशी 'बढोना' भी खिलाया जाता है, जिसमें मीठे पकवान आदि सम्मलित किये जाते हैं। छत्तीसगढ़ी कृषि कहावतों में फसल के लिए यह कहावत उपयुक्त है:

कोर गाँथे बेटी, नींदे कोड़े खेती

(जिस प्रकार स्वच्छ, कंघी किए/बाल सँवारी बेटियाँ अच्छी लगती हैं। उसी प्रकार निंदाई–कुड़ाई की गई फसल भी अच्छी लगती है।)

छत्तीसगढ़ मेहनत–कस अंचल है। यहाँ की हार सुबह स्वर्णिम हुआ करती है। कृषक–जन खेती कार्य में बहुत मेहनत करते हैं, इसलिए छत्तीसगढ़ी गीतकार– भैयालाल हेड़ऊ जी कहते हैं:

धन–धन रे मोरे किसान, धन–धन रे मोरे किसान...
मै तो तोला जानंव तैं अस, मै तो तोला जानंव तैं अस,
तैं अस भुँईया के भगवान...

अन्न जब खेतों से होकर हमारी थाली में आती है, उसमें कृषकों की अथाह मेहनत होती है। रात में जो भोजन बनती है, और जो खाने के बाद बच जाती है, उनकों अंगाकर रोटी, मुठिया रोटी, बोरे–बासी आदि के रूप में सुबह प्रयुक्त कर लिया जाता है। बासी सेहत के लिए अति लाभदायक है। रात के बचे भोजन (चाँवल) को पानी डालकर सुबह तक छोड़ दिया जाता है। सुबह भोजन के समय उसका प्रयोग चुटकी भर नमक डालकर और साथ में प्याज, टमाटर या आम की चटनी, चेंच भाजी, अमारी भाजी आदि सब्जियों के साथ भोज्य–रूप में ग्रहण किया जाता है। गर्मियों में शरीर में ठंढकता बनाए रखती है– बासी। भरपूर गुण है बासी में, इसलिए 'छत्तीसगढ़ का टॉनिक' कहा जाता है। कहा भी गया है:

बासी के गुन कहंव कहाँ तक, येला टार झन हाँसी म।
गजब बिटामिन भरे हवय जी, छत्तीसगढ़ के बासी म।।

छत्तीसगढ़ में कृषि कार्यों की संपूर्ण समाप्ति पर जब फसल घर के भंडारगृह में आ जाता है तब बसदेवों का आगमन प्रारंभ हो जाता है। गाँव–गाँव में प्रातःकाल से बसदेवा अपनी चिकारा, तंबूरा लिए गान करते हैं:

सेमी फरे लमेरा म, जोर दे हमरो झोरा म जय–गंगान...
उगती–बुड़ती बढ़य धान, बसदेवा के बात ल मान
सुपा म वो देदे दान, नाम कमाबे होही गुनगान, जय–गंगान...
सुखी–सुमंगल रहे परिवार, तीर झन आवय विकार, जय–गंगान...

(सुबह–सुबह घर–द्वार पर आने के कारण गाँव में स्वेच्छा से घरवाले अन्न–दान भी करते हैं।)

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ का ग्राम्य–जीवन केवल मानवीय संरचना नहीं, अपितु गहन मानवीय मूल्यों व सांस्कृतिक चेतना का जीवंत प्रतिबिंब है। यहाँ जन्म, विवाह व मृत्यु संस्कार मानव समाज को परंपरा और आस्था से जोड़ता है। ग्राम्य–लोकजनों की एकता, सद्भाव व संस्कार व्यक्ति को समाज से जोड़ने के साथ–साथ नैतिक व सांस्कृतिक आधार प्रदत्त करता है। मातृ–संस्कार,

अतिथि–संस्कार, मित्रता और वार्तालाप के संस्कार छत्तीसगढ़ी समाज की विनम्रता, संवेदनशीलता और आत्मीयता को प्रकट करते हैं। कृषक–संस्कार कृषि के साथ संस्कार के सहसंबंध प्रदर्शित करते हैं। लोक–कथन, लोकगीत व आंतरिक–संस्कार यहाँ की गूढ व गहन संस्कृति को दर्शाता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है– 'छत्तीसगढ़ का ग्राम्य–संस्कार' एक समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर है, जो जीवन के प्रत्येक पक्ष को संतुलित, अनुशासित और मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण बनाता है। यह न केवल परंपराओं का संरक्षण करता है, बल्कि बदलते समय में भी सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में महती भूमिका निभाता है।

संदर्भ सूची

1. जनगणना 2001, अनंतिम आँकड़ेः एक दृष्टि, 05।
2. ठाकुर, हरी (2007) *शहीद वीर नारायण सिंह,* छ.ग. राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 30।
3. मिश्र, गोपालचंद्र (संवत् 1686 विक्रम) खूब तमाशा, छंद–07।
4. पांडे, के. एस. (2019) भारत का संविधान, इलाहाबाद लॉ पब्लिकेशन, प्रयागराज, पृ. 09।
5. संविधान (चवालीसवां संसोधन) अधिनियन, 1978 की धारा 2 द्वारा (20–6–1979 से) अंतः स्थापित ।
6. शर्मा, सुधीर (2002) *क्रांति पुरुष–हरी ठाकुर,* छ.ग. हिंदी साहित्य सम्मेलन, रायपुर, पृ. 50।
7. बलेन्द्रे, जी.एल. (2018) *बिरहोर जनजाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन,* आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान क्षेत्रीय इकाई, सरगुजा, पृ. 32।
8. मिश्र, करुणा (2011) *गढ़ मंडला के गोंड़ राजवंश का सांस्कृतिक इतिहास,* शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ. 46।
9. शर्मा, सरला (2013) *आखर के अरथ,* वैभव प्रकाशन, रायपुर, पृ. 18।
10. बलेन्द्रे, जी.एल. (2018) *बिरहोर जनजाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन,* आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान क्षेत्रीय इकाई, सरगुजा, पृ. 37।
11. विवेक आचार्य, प्रधान संपादक, बिहानिया पत्रिका अंक–20, संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन, रायपुर, 55।
12. शर्मा, सरला (2013) *आखर के अरथ,* वैभव प्रकाशन, रायपुर, पृ. 16।
13. शर्मा, सरला (2013) *आखर के अरथ,* वैभव प्रकाशन, रायपुर, पृ. 17
14. पाण्डेय, ऋषिराज (2008) *छत्तीसगढ़ः दक्षिण कोशल के कलचुरी,* छ.ग. राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 21।

****